

ह्येषु खस्थान् MBh. 3, 17090. स्वर्गे लोके श्रवतां नास्ति धिञ्ज्यम् 17, 82. तयाङ्गारा ये धिञ्ज्येषु दिवि त्विताः 13, 4131. 12, 9731. INDR. 1, 35. भौमानि, श्रोतिर्मयाणि RAGH. 13, 59. रक्षित MBh. 6, 5824. धिञ्ज्याद्विवासितः 3, 5496. ब्रह्मणः BHĀG. P. 8, 3, 36. धिञ्ज्यानि स्वानि ते जग्मुः 23, 27. Vgl. धिञ्ज्य. — 4) adj. (von धिञ्ज्य 2) auf einen Erdaufwurf, der als Altar dient, aufgesetzt; βώμιοςः अग्निं AV. 2, 33, 1. 7, 67, 1. AIT. BR. 3, 5. ÇAT. BR. 14, 9, 4, 5. TAĪTT. ĀR. 3, 8, 1. ĀÇV. GRHJ. 3, 6. अ० LĪTJ. 3, 3, 17. Substantivisch ohne Beisatz von अग्निं VS. 12, 4. अण् वा अस्वैष धिञ्ज्यो क्रीयते TS. 3, 1, 3, 1. धिञ्ज्य = अग्नि, n. AK. MED. m. H. a. n. DHAR. — 5) n. Sternbild (wie ein auf einem Erdaufwurf brennendes Feuer erscheinend) AK. H. 108. H. a. n. MED. DHAR. उपद्रुते धिञ्ज्ये VARĀH. BRH. S. 97, 18. कृस्ता मूलं श्रवणं ० रतानि प्रुभानि धिञ्ज्यानि 98, 12. 103, 6. 8. 107 (ANUKR.), 12 (zu bemerken ist, dass alle diese Stellen zu einem Theile des Werkes gehören, welcher in einer Handschrift ganz fehlt; einige dieser Stellen fehlen auch in anderen Handschriften). सार्पेन्द्रपौल्यधिञ्ज्यानाम् SŪRAS. 11, 21. 8, 1. — 6) n. Meteor: धिञ्ज्यमाकाशमं यथा । स मामभ्यवधीतूर्णं जत्रुद्देशे MBh. 3, 7272. Ebenso das f. धिञ्ज्याः उत्क्राः । धिञ्ज्योत्क्राशानिविद्युत्तारा इति पञ्चधा भिन्नाः VARĀH. BRH. S. 32, 1. 2. तारा फलपादकारी फलार्धदात्रो प्रकीर्तिता धिञ्ज्या 3. धिञ्ज्या कृशात्पुच्छका धन्विष दश दृश्यते ऽत्तरभ्यधिकम् । ज्वालिताङ्गरनिकाशा द्वौ कृस्तौ सा प्रमाणेन ॥ 6. — 7) m. Bein. des Uçanas, der Planet Venus (vgl. धिपणा als Bein. des Brhaspati) H. 120. H. a. n. — 8) Macht, Kraft (बल, शक्ति) H. a. n. MED. — Vgl. धिञ्ज्य, धिञ्ज्य, चारुधिञ्ज्य.

1. धी (दीधी DHĀTUR. 24, 68. P. 6, 1, 6. 7, 4, 53. PAT. zu P. 7, 2, 10. VOP. 9, 44. fgg.). दीध्ये, (आ) दीधीयास्, दीधीयान्, दीध्यान, (आ) अदीधीत PĀNĪKĀV. BR. दीधिरे TAĪTT. ĀR. act. im praes. nur partic. दीध्यतस् (nom. pl.); अदीधित्, अदीधयस्, (वि) दीध्यस्, (अनु) दीधियस्, दीधय, दीधिम; partic. धीर्त्. Die häufig vorkommende Form धीमहि (z. B. RV. 4, 131, 2. 2, 11, 12. 23, 10. 3, 62, 10. 5, 82, 1. 6. 8, 7, 18. 10, 33, 4. 36, 5) gehört nicht hierher, sondern zu धी, wird auch in den meisten Fällen von den Commentatoren so erklärt und scheint nur wegen ihres Vorkommens in der berühmten Gājatri (तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि । धियो यो नः प्रचोदयात् RV. 3, 62, 10) auch zu धी (ध्या) gezogen worden zu sein; vgl. SĪ. zu d. St. MAṆDU. zu VS. 3, 33. Sie hat aber auch in diesem Zusammenhange keine andere Bedeutung (vgl. BENFEY zum SV.) und Nachbildungen der Gājatri, wie in TAĪTT. ĀR. 10, 1, 3. 20, 1 (Ind. St. 2, 27. 191), in welchen धीमहि vielleicht aus धी zu erklären ist, würden nur zeigen, dass die Form schon damals irrig aufgefasst wurde. 1) act. scheinen, videri: अनेत्रविद्यया मुग्धा भुवनान्यदीधयुः die Geschöpfe glichen einem Verirrten RV. 5, 40, 3. यद्वापिः शंतेनवे पुरोहितो होत्राय वृतः कृपयन्नदीधेतु 10, 98, 7. — 2) wahrnehmen, med.: यावन्नश्चलसा दीध्यानाः RV. 7, 91, 4. das Augenmerk richten auf: अधि तमि प्रतरे दीध्यानाः 10, 10, 1. कृवा सबाधः शशमानो अस्व नशदमि ऋविषं दीध्यानाः 4, 22, 4. mit मनसा denken, nachsinnen, nachtrachten: देवद्वीचा मनसा दीध्यानाः 1, 163, 12. सत्येन मनसा दीध्यानाः 7, 90, 5. ते ऽविन्दन्मनसा दीध्याना यनु क्कन्न प्रथमं देवयानम् 10, 181, 3. अयंशयं त्वा मनसा दीध्यानाम् 183, 2. act.: दीध्याते मनीषा 2, 20, 1. auch ohne diesen Beisatz: सतं शंसन्त सनु दीध्यानाः 10, 67, 2. तं प्रतास ऋषयो दीध्यानाः पुरो दीधिरे 4, 80, 1. मन्युं कृत्यो

च दीधिरे TAĪTT. ĀR. 1, 28, 2. act.: प्रुचोदयन्दीध्यत उक्थशासः (im RV. v. l.) AV. 18, 3, 21. धीत das Gedachte, im Sinn Liegende: विश्वान्यश्चिना पुवं प्र धीतान्यगच्छतम् RV. 8, 8, 10. सं धीतमस्रुतम् 40, 3. यो धीता मानुषाणां पश्चा गा इव रतति 41, 1. — 3) wünschen: महे महे त्वसे दीध्ये नृनिन्द्रायित्वा त्वसे अतव्यान् RV. 5, 33, 1. — Vgl. ध्या.

— अनु den Sinn auf Etwas richten, beobachten: सतं शंसन्त सतमित् अक्रुरनु व्रतं व्रतया दीध्यानाः RV. 3, 4, 7. ये वध्यमानमनु दीध्याना अन्वैतन्त मनसा चतुषा च AV. 2, 34, 3. दीधामनु प्रसिति दीधिषुर्नरः RV. 10, 40, 10 (दीधुः AV.).

— अभि betrachten, bedenken: अभि तत्रैव दीधया मनीषाम् RV. 3, 38, 1. तदित्सुधस्यमभि चारु दीधय 10, 32, 4. अभि क्रत्वा मनसा दीध्यानाः 4, 33, 9.

— अण् aufauern (?): घृषुः श्येनाय क्वनं ग्रामु स्वासु वंसंगः । अण्व दीधेदीधुः RV. 10, 144, 3.

— आ gedenken, verlangen, sich Sorge machen um: मा गतानामा दीधीया ये नपति परावतम् AV. 8, 1, 8. achten auf: आ ये मे अस्व दीधयन्ततयं RV. 7, 7, 6. bedenken, sich vorsetzen: यदादीध्ये न देविपाप्येभिः 10, 34, 5. स आदीधीत गर्भो वै मे ऽयमत्तर्कितस्तं वाचा प्रजनया इति PĀNĪKĀV. BR. 7, 3, 2. 8, 8. Hierher vielleicht als partic. aor. आधीयमाण sich sehrend, verlangend: आधीयमाणयाः पतिः प्रुचायाश्च प्रुचस्यं च RV. 10, 26, 6. partic. आधीत s. bes.; vgl. 2. आधि, आधी, आदीध्यक, आदीध्यन.

— अन्वा Jinds gedenken: द्यावापृथिवी अनु मा दीधीयाम् AV. 2, 12, 5. अन्वादीध्यायामिह नः सखाया TAĪTT. ĀR. 4, 20, 8.

— उपा s. 2. उपाधि.

— उद् verlangend hinaufschauen: उद्दामिवेत्तुज्ञतो नायितासो ऽदीधयुर्दशाराज्ञे वृतासः RV. 7, 33, 5.

— नि. Der Form nach wären hierher die Bildungen निदीध्यत् und निधीत zu ziehen in dem Spruche: ऐन्द्रः प्राणो अङ्गे अङ्गे नि दीध्यैन्द्र (नि दीध्यते P. 6, 1, 119, Sch.) उद्दानो अङ्गे अङ्गे निधीतः VS. 6, 20; der Sinn zeigt aber, dass hier das Zeitwort 1. धी zu suchen ist und aus Vergleichung der Parallelstelle TS. 1, 3, 10, 1 kann man vermuthen, dass in der VS. die Worte entstellt sind.

— प्र hervorschauen, aufauern: इमे पृथा पृदाक्वः प्रोध्यत आसते AV. 10, 4, 11.

— प्रति erwarten, erhoffen: वसूनि ज्ञाते जन्मान् आत्रसा प्रति भामं न दीधिम RV. 8, 88, 3. नि. 6, 8. SV. falsch दीधिमः.

— वि zögern, zaudern, unentschlossen sein: अर्वाडेहि मा वि दीध्यः AV. 8, 1, 9. किं महेश्चिद्धि दीधयः RV. 8, 21, 6. — Vgl. आदीधयु.

2. धी (= 1. धी; vgl. ध्या) f. P. 3, 2, 178, VArt. 5 und dazu P. V. VOP. 26, 73. gen. pl. धीर्नाम् und धियाम् (RV. 5, 44, 13). 1) Gedanke, Vorstellung; Absicht: धीभिश्चन मनसा स्वैर्नृत्तमिः RV. 4, 139, 2. चोदः कुवित्तुत्वात्सातये धियः 143, 6. पुरो अग्निं धिया द्ये mit Bedacht 139, 1. अस्मा अवनतु ते धियः 8, 3, 1. स्मो नयं सति नो धियः 21, 6. पुवं धियं ददयुर्वस्यंष्टये 73, 2. 9, 110, 7. जिन्या गविष्टये धियः 108, 10. नानानं वा उ नो धियो वि व्रतान् जन्नाम् 112, 1. AV. 6, 41, 1. पापीर्धियः böse Gedanken 9, 2, 25. — ÇAT. BR. 14, 4, 3. 7, 9. परत्रोत्कर्मर्था adj. M. 2, 161. 177. — 2) Einsicht, Erkenntnis; Intelligenz, Geist; = बुद्धि u. s. w. AK. 1, 1, 4, 10. 3, 4, 10, 125. H. 308. TATTVAS. 8. सुभ्रया श्रवणं चैव प्रकृणं धारणं तथा ॥ ऊहे ऽपोहे ऽर्धविज्ञानं तन्नज्ञानं च धीगुणाः ।